» वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन हेतु सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई - प्रो. मनोज दीक्षित

इबादत न्यूज

बीकानेर, 16 दिसम्बर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे। गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने।

सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली।

प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई।

कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि बकरी पालन ज्यादा से ज्यादा करें। यह कम खर्चे में संभव है और बकरियों में ज्यादा बीमारी भी नहीं आती। बकरी का दूध इम्यूनिटी बढ़ाने वाला होता है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ पी.एस.शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया।

प्रशान्त ज्योति श्रीगंगानगर

बीकानेर में पिछले 5 सालों में चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई- प्रो. मनोज दीक्षित

चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू के बीच जल्द होगा एमओयू- डॉ अरुण कुमार

वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन हेतु सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम आयोजित

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे। गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने।

सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई।

कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि बकरी पालन ज्यादा से ज्यादा करें। यह कम खर्चे में संभव है और बकरियों में ज्यादा बीमारी भी नहीं आती। बकरी का दूध इम्यूनिटी बढ़ाने वाला होता है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ पी.एस.शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण सह संयोजक डॉ. शंकर लाल, कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दुर्गा सिंह, डॉ. कुलदीप सिंघे एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थिति रहे द्य मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया।

चारे की क्वालिटी में सुधार के लिए राजुवास-एसकेआरएयू मिलकर करेंगे कार्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे। गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कुलपति डॉ. दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं।

हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरएयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी।

पंजाब केसरी
TUE,17 DECEMBER 2024
EDITION: SHRI GANGA NAGAR, PAGE NO. 3

बीकानेर में पिछले 5 सालों में चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई : प्रो. मनोज दीक्षित

प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते हुए। (प्रेम)

बीकानेर, 16 दिसंबर (प्रेम) : स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ।

मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एम.जी.एस.यू. कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ. मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टैक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे।

गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एम.जी.एस.यू. कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था, लेकिन पिछले 5 सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है, यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है।

जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एम.ओ.यू. किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और 7 दिन तक प्रशिक्षण लिया।

उन्होंने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने। सी.एस.यू.टी. कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टैक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है।

प्रतिभागियों सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था।

[illegible]

वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन हेतु सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम आयोजित

✍ सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 16 दिसम्बर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे। गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने। सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई। कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि बकरी पालन ज्यादा से ज्यादा करें। यह कम खर्चे में संभव है और बकरियों में ज्यादा बीमारी भी नहीं आती। बकरी का दूध इम्यूनिटी बढ़ाने वाला होता है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ पी.एस. शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण सह संयोजक डॉ. शंकर लाल, कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दुर्गा सिंह, डॉ. कुलदीप सिंघे एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थिति रहे। मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया।

बर्फीली रात में दहका जवानों का शौर्य, 71 लोंगेवाला साबित हुआ दुश्मन के लिए वाटरलू'

जैसलमेर, 16 दिसम्बर। भारत-पाकिस्तान के बीच साल 1971 के अंतिम दिसम्बर माह में पूर्वी बंगाल और बाद में नए देश बांग्लादेश के मसले पर आमने-सामने के युद्ध में 16 दिसम्बर का दिन भारत के इतिहास का गौरवशाली दिन है। जब ढाका में पाकिस्तान की सेना ने लेफ्टिनेंट जनरल एएके नियाजी ने 93 हजार सैनिकों के साथ भारतीय सेना के लेफ्टिनेंट जनरल

वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन हेतु सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम आयोजित

चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू के बीच जल्द होगा एमओयू : डॉ अरुण कुमार

■ लोकमत , बीकानेर

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश वास्तव थे।गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने। सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश वास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई। कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया।

बीकानेर में पिछले 5 सालों में चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई- प्रो. मनोज दीक्षित, कुलपति, एमजीएसयू, बीकानेर

चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू के बीच जल्द होगा एमओयू- डॉ अरुण कुमार, कुलपति, एसकेआरएयू, बीकानेर

वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन हेतु सात दिवसीय प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम आयोजित

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे।गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने। सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर श्री संदीप सिहाग और श्री शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है।

दैनिक सीमा किरण

बीकानेर में पिछले 5 सालों में चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई : कुलपति दीक्षित

चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू के बीच जल्द होगा एमओयू : कुलपति अरुण

सीमा किरण

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे। गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने। सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्रा ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर श्री संदीप सिहाग और श्री शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई। कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि बकरी पालन ज्यादा से ज्यादा करें। यह कम खर्चे में संभव है और बकरियों में ज्यादा बीमारी भी नहीं आती। बकरी का दूध इम्यूनिटी बढ़ाने वाला होता है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था।

प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ पी.एस.शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण सह संयोजक डॉ. शंकर लाल, कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दुर्गा सिंह, डॉ. कुलदीप सिंघे एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थिति रहे। मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया।

बीकानेर में पिछले 5 सालों में चारे के कारण ऊन की क्वालिटी खराब हुई- प्रो.दीक्षित

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे।गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित ने कहा कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन पिछले पांच सालों में चारे की गुणवत्ता खराब होने से ऊन की क्वालिटी भी खराब हुई है। यहां की ऊन थोड़ी सख्त हो गई है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। चारा अब नैसर्गिक नहीं रहा। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होंने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 70 वर्षीय महिला के हिस्सा लेने को लेकर कुलपति ने कहा कि ये कृषि विश्वविद्यालय के प्रति लोगों का विश्वास ही है कि 70 वर्षीय महिला भी प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहुंची और सात दिन तक प्रशिक्षण लिया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से कहा कि वे इंटरप्रेन्योर बने।

सीएसयूटी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रतिभागियों ने यहां जो सीखा वे उसे ग्रास रूट तक ले जाएं। वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री ने कहा कि प्रशिक्षण की बहुत महत्ता होती है। उन्हें खुशी है कि यहां प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी शिद्दत से ट्रेनिंग ली। प्रतिभागियों श्रीमती सरोज, बीटेक इंजीनियर संदीप सिहाग और शिवराम सोलंकी ने प्रशिक्षण के अनुभव बताते हुए कहा कि उन्हें भेड़ और बकरी पालन की बेहतरीन ट्रेनिंग मिली है। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों को साफा पहना कर और शॉल ओढ़ाकर की गई। कार्यक्रम के आयोजक व पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष और छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि महाविद्यालय बीकानेर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग और कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया।आगामी फरवरी माह में के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में एक और ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि बकरी पालन ज्यादा से ज्यादा करें। यह कम खर्चे में संभव है और बकरियों में ज्यादा बीमारी भी नहीं आती। बकरी का दूध इम्यूनिटी बढ़ाने वाला होता है। हरियाणा के करनाल में बकरी का दूध 1600 रुपए लीटर तक बिक चुका है। 50-50 ग्राम के पाउच बनाकर दूध बेचा जा रहा था।

प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ पी.एस.शेखावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण सह संयोजक डॉ. शंकर लाल, कृषि विज्ञान केंद्र बीकानेर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दुर्गा सिंह, डॉ. कुलदीप सिंघे एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थिति रहे द्य मंच संचालन डॉ सुशील कुमार ने किया।

दैनिक कामयाब कलम
राजस्थान का सबसे तेज बढ़ता अखबार

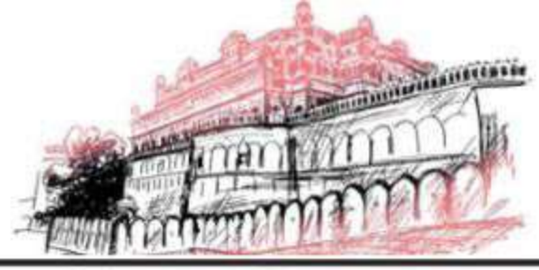

बीकानेर में चारा की क्वालिटी बिगड़ी, इससे प्रभावित हो रही बीकानेरी भेड़ों की ऊन

कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। चारे की गुणवता खराब होने के कारण बीकानेरी भेड़ो की ऊन की क्वालिटी भी बिगड़ रही है। सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर एमजीएसयू कुलपति डॉ मनोज दीक्षित यह जानकारी देते हुए बताया कि बीकानेर उच्च गुणवत्ता की ऊन उत्पादन को लेकर विश्व विख्यात था। लेकिन अब यहां चारा नैसर्गिक नहीं रहा, जिससे भेड़ों की ऊन खुश्क हो रही है। इसके चलते अब आंध्रप्रदेश और तेलंगाना ऊन उत्पादन में हमसे बहुत आगे निकल गए हैं। हमें चारे की क्वालिटी में सुधार करना होगा। इसको लेकर राजुवास जल्द ही कोडमदेसर के पास चारे की क्वालिटी को लेकर रिसर्च करेगा। उन्होने कहा कि जीने की क्वालिटी अगर सुधारनी है तो हमें खाने की क्वालिटी में सुधार करना होगा। उन्होने कहा कि चारे की क्वालिटी में सुधार को लेकर राजुवास और एसकेआरयू दोनों मिलकर कार्य करेंगे। जल्द ही दोनों विश्वविद्यालयों के बीच इसको लेकर एमओयू किया जाएगा। जानकारी में रहे कि बीकानेर में भेड़ से ऊन निकालने और इसके बाद धागा बनाने का काम होता है। इसके अलावा धागे से गलीचा बनाने का काम भी होता है। अनेक नवाचार करते हुए बीकानेर पिछले कुछ सालों में देश के ऊन केंद्रों में शामिल हो गया, जहां गलीचा भी बनता है और धागा भी तैयार करके निर्यात किया जाता था, लेकिन पिछले कई सालों से भेड़ो की ऊन खुश्क होने के कारण बीकानेरी ऊन की डिमांड घटती जा रही है।

वैज्ञानिक तरीके से दिया गया भेड़ एवं बकरी पालन प्रशिक्षण

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक तरीके से भेड़ एवं बकरी पालन के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। कार्यक्रम में पशु पालको को वैज्ञानिक तरीकों से भेड़ बकरी पालन का प्रशिक्षण दिया गया। मानव संसाधन विकास निदेशालय सभागार में आयोजित समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमजीएसयू कुलपति एवं राजुवास के कार्यवाहक कुलपति डॉ मनोज दीक्षित और विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी कानपुर के कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. वेद प्रकाश श्रीवास्तव थे।गेस्ट ऑफ ऑनर कुलसचिव डॉ देवा राम सैनी व वित्त नियंत्रक श्री राजेन्द्र कुमार खत्री थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। अतिथियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे 6 राज्यों राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के 55 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।